अगस्त 2025, अंक 08, वर्ष -02

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

साल 1975

'शोले' और अन्य फिल्में

आरती ठाकुर, इन्द्रजीत सिंह, इक़बाल रिज़वी, डॉ. इस्पिता प्रधान, डॉ. नरेंद्र नाथ पांडेय, डॉ. रक्षा गीता, धर्मवीर अरोड़ा, प्रताप सिंह, प्रीति प्रज्ञा प्रधान, फ़रीद खाँ, भवतोष पांडे, मनोरमा सिंह, रत्नेश कुमार, रवि शेखर, रविराज पटेल, राकेश कुमार त्रिपाठी, रेखा श्रीवास्तव, विनोद नगर, शशांक दुबे, सूर्यन मौर्य, सैयद एस. तौहिद, सौम्या बैजल, हितेंद्र पटेल

आवरण: आर वर्क

cinemahaul

अगस्त 2025

वर्ष 02 अंक 08

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: शोले और अन्य फ़िल्में

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 5

आंधी 8

आरती ठाकुर

साहित्य और सिनेमा का कालजयी शिलालेख “आँधी” 11

इन्द्रजीत सिंह

संगीत से सराबोर एक साल 20

इक़बाल रिज़वी

1975 का सिनेमा : विरोधाभासों की सुरमई गाथा 34

डॉ. इप्सिता प्रधान

विरोधावासी फिल्मों का वर्ष- 1975 40

डॉ॰ नरेंद्र नाथ पांडेय

समाज, संस्कृति और पितृसत्ता से ‘जूली’ का संघर्ष 47

डॉ. रक्षा गीता

संन्यासी 54

धर्मवीर अरोड़ा

एक जबर पटकथा में छिपे ‘शोले' 57

प्रताप सिंह

1975 में प्रदर्शित फिल्मों में माँ 67

प्रीतिप्रज्ञा प्रधान

सत्ता से टकराने का साहस : 'निशांत' और 'चरनदास चोर' 71

फ़रीद ख़ाँ

1975 : शोले से निशांत तक की यात्रा 77

भवतोष पाण्डेय

दीवार 84

मनोरमा सिंह

'शोले' सो ले नहीं कहती 92

रत्नेश कुमार

शोले फिल्म का 50वाँ साल और चुपके चुपके 95

रविशेखर

बसंती की नज़र से शोले 99

रविराज पटेल

सिक्के का काम है चलना 104

राकेश कुमार त्रिपाठी

जय संतोषी माँ 113

रेखा *श्रीवास्तव*

शोले: रुपहले पर्दे से डिजिटल स्क्रीन तक 116

विनोद नागर

चोरी मेरा काम 127

शशांक दुबे

छोटी सी बात: बड़े शहर की मासूम कहानी 136

सूर्यन मोर्य

गीत गाता चल 143

सैयद एस. तौहीद

चुपके चुपके: संवेदना, अनेकता और भाषा की राजनीति 150

सौम्य बैजल

फिल्मों का गंभीर और वैचारिक दस्तावेजीकरण 157

हितेन्द्र पटेल

दिमाग के पर्दे पर चलती है 'शोले' 163

अजय ब्रह्मात्मज

1975 में सक्रिय हीरो-हीरोइन 171

अजय ब्रह्मात्मज

मेरी बात

अगस्त अंक का आवरण विषय 'साल 1975 और अन्य फिल्में' तय करते समय मन आशंकित था कि मालूम नहीं इस आवरण विषय का लेखक क्या आशय निकालें? जिन लेखकों से बातें हो पाईं, उनसे मैंने यही कहा कि इस विषय को तय करते समय 'शोले' बीज फिल्म रही, लेकिन हम नहीं चाहते कि साल 1975 की फिल्मों पर लिखते समय केवल 'शोले' पर केंद्रित लेख हों, इसलिए आवरण विषय में 'और अन्य फिल्में' जोड़ लिया गया। अच्छा ही रहा कि दूसरी फिल्मों पर भी लेख लिखे जा सके।

मुझे खुशी है कि लेखकों ने अलग-अलग फिल्मों और 1975 की विरोधाभासी प्रवृत्तियों पर लेख लिखे। कुल छह लेखों में प्रमुख या प्रकारांतर रूप से 'शोले' का उल्लेख है। इनमें भी कुछ लेखों में ‘शोले’ को लेकर सवाल उठाये गए हैं। और ये सवाल वाजिब हैं कि क्या केवल सर्वाधिक कारोबार की वजह से सिर्फ शोले की चर्चा हो या 1975 में रिलीज हुई अन्य फिल्मों का भी उल्लेख किया जाए। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि ‘शोले’ साल 1975 की सर्वाधिक लोकप्रिय और अधिकतम कमाई की फिल्म है। फिर भी सिनेमा के लिहाज और संदर्भ से गौर करें तो यह साधारण फिल्म है। एक पुलिस अधिकारी द्वारा गैरकानूनी तरीके से दो सामान्य गुंडो को किराए पर लाकर अपने प्रतिद्वंदी के खिलाफ मोर्चाबंदी करना एक तरह से

अधिनायकवादी विचार है। मनोरंजन और विविधता के नाम पर इस फिल्म में काफी छूट ली गई है। आपातकाल के दौर में आई इस फिल्म की लोकप्रियता के कारणों पर अधिक विचार नहीं हो पाया है। इस अंक में कुछ लेखकों ने उन पहलुओं पर ध्यान दिया है।

इस अंक में 'शोले' से इतर अन्य फिल्मों पर लिखे लेखों में कम चर्चित मगर समय की कसौटी पर खरी उतरी फिल्मों की विशेषताओं को जाहिर किया गया है। 'छोटी सी बात', 'चुपके चुपके, 'चोरी मेरा काम', 'जूली' 'निशांत' और 'आंधी' पर लेखकों ने विस्तार से लिखा है। खास कर 'छोटी सी बात' और 'चुपके चुपके' को पूरी संवेदना और समझ के साथ उसकी ऐतिहासिकता की पृष्ठभूमि में रेखांकित करने की कोशिश की गई है।

साल 1975 के संगीत, चरित्र, हीरो-हीरोइन और अन्य घटनाओं एवं प्रसंगों का आकलन है कुछ लेखो में। साल 1975 को याद करते हुए उन पर विचार करना इस अंक को महत्वपूर्ण बना देता है।

मैं हमेशा कहता हूं कि कोई भी कार्य संपूर्ण नहीं होता। खासकर पत्रिकाओं के लिए किसी एक विषय पर केंद्रित अंक निकालने में बहुत सारी चीजें छूट जाती हैं। इस अंक में भी कुछ ना कुछ छूटा है। बहुत कुछ रह गया है। आश्वासनों के बावजूद कुछ

लेखक लेख समय से नहीं भेज पाए। वहीं कुछ नए लेखक इस अंक से जुड़े और उनके लिखे से इस अंक की सामग्री और शोभा बढ़ गई।

मैं इस अंक के सभी सहयोगी लेखकों का आभारी हूं। अपने प्रकाशक नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा के सहयोग से ही सभी अंक महीने के अंत तक प्रकाशित हो पाते हैं।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें।

अजय ब्रह्मात्मज

अगस्त 2025

मुंबई

cinemahaul@gmail.com